सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान
14 आर्थिक परिदृश्य
21 राष्ट्रीय परिदृश्य
26 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
29 क्रीड़ा जगत्
32 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
33 सारभूत तत्व कोष
36 विज्ञान समाचार
38 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लेख

43 समसामयिक लेख—(i) अपशिष्ट प्रबंधन : आज की आवश्यकता
45 (ii) वैश्विक महामारी कोविड-19 : खाद्य असुरक्षा का गहराता साया
48 प्रतिरक्षा लेख—सुरक्षा की नींव को मजबूत करेगा सीडीएस
49 खाद्य लेख—भारत में कुपोषण
51 विधायी-कृषि लेख—कीटनाशक प्रबंधन विधेयक 2020 का उद्देश्य : किसानों को सुरक्षित एवं प्रभावी कीटनाशक उपलब्ध कराना
52 चिकित्सीय लेख—मानव मस्तिष्क में तनाव नियंत्रण की व्यवस्था

हल प्रश्न-पत्र

54 एस.एस.सी. कम्बाइंड हायर सेकण्डरी (10+2) लेवल परीक्षा, 2018 (प्रथम चरण)
63 दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड सहायक शिक्षक (प्राइमरी) परीक्षा, 2019

आर.बी.आई. सहायक (प्रा.) परीक्षा, 2020

77 तर्कशक्ति
80 संख्यात्मक अभियोग्यता
83 English Language
86 आर.आर.बी. जूनियर इंजीनियर कम्प्यूटर आधारित परीक्षा, 2019
93 Forthcoming SSC CGL (Tier-II) Exam., Solved Model Paper
103 आगामी मध्य प्रदेश जेल प्रहरी (कार्यपालिक) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
109 आगामी दिल्ली पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
116 आगामी बिहार सब-इंस्पेक्टर (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

122 वार्षिक रिपोर्ट 2019-20 : वस्त्र मंत्रालय
124 मगध का शुंग राजवंश (185 ई.पू. से 73 ई.पू.) : प्रमुख तथ्य
126 कॅरियर सलाह
128 क्या आप परिचित हैं ?
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **–सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

पाप से घृणा कीजिए, पापी से नहीं

"Hate the sin and not the sinner" is a precept which, though easy enough to understand, is rarely practiced, and that is why the poison of hatred spreads in the world.

—Mahatma Gandhi

हम सब अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के पक्षधर हैं, परन्तु हम में से ऐसे कितने व्यक्ति हैं, जो वॉल्टेयर की तरह यह कह सकें कि यद्यपि मैं तुमसे सहमत नहीं हूँ तथापि तुमको अपनी बात कहने की आजादी दिलाने के लिए मैं जन्म भर संघर्ष करने को तैयार हूँ.

हम स्वयं तो मनमानी कभी-कभी अवांछनीय कथन की भी स्वतन्त्रता चाहते हैं, परन्तु सामने खड़े व्यक्ति को ऐसा करते हुए नहीं देख सकते हैं.

पिछले कुछ वर्षों से अभिव्यक्ति की एकपक्षीय स्वतन्त्रता की मानसिकता को लेकर हमारे देश में पुस्तकों को जलाने की परम्परा चल पड़ी है. सर्वप्रथम रामचरित मानस की प्रतियाँ जलाई गईं, क्योंकि उसमें समुद्र से यह कथन कराया गया है—

''ढोल गँवार सूद्र पसु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी।।''

इसके बाद कुरान को लक्ष्य करके सलमान रश्दी द्वारा लिखी गई पुस्तक जलाई गई. इतना ही नहीं उनकी हत्या करने का फरमान जारी कर दिया गया, जो अभी तक लागू है. फलतः रश्दी साहब अभी तक अपने प्राणों की रक्षा के लिए इंगलैण्ड में छिपे बैठे हैं.

इस प्रकार की अन्तिम घटना है डॉ. भीमराव अम्बेडकर को लक्ष्य करके अरुण शौरी द्वारा लिखी गई पुस्तक, जिसकी प्रतियाँ देश की सर्वोच्च संस्था संसद में जलाई गईं, जो जगह राष्ट्रीय हित सम्बन्धी बहस के लिए बनाई गई है.

प्रश्न यह है कि पुस्तकों को जलाने से पुस्तक के रचयिता की बात क्या अनकही हो जाएगी अथवा क्या आकाश में उसकी व्याप्ति को निर्मूल किया जा सकेगा ?

अभिव्यक्ति का कोई निश्चित रूप नहीं होता है और न उसके रूप निश्चित किए जा सकते हैं. पुस्तकों का जलाना भी अभिव्यक्ति का एक रूप है. अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के दीवानों का वश चले तो वे पुस्तक लिखने वालों की हत्या ही कर दें. क्रोध होता है वस्तुतः लेखक के प्रति, उसको उतारा जाता है पुस्तक पर. बुरी पुस्तक का जवाब अच्छी किताब है. विरोधी यदि ऐसी पुस्तकें लिख सकें जिनको पढ़ कर लोग तुलसीदास, सलमान रश्दी तथा अरुण शौरी की रचनाओं को भूल जाएं, तो हमारे विचार से विरोध भी सार्थक एवं प्रभावी हो तथा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का पालन भी सही दिशा में हो जाए, परन्तु बहुत कम लोगों में किताब लिखने की क्षमता होती है. अतः वे उस किताब पर टूट पड़ते हैं जिसे वे बुरी समझते हैं. यह अवसर मिल जाए तो वे लेखक को जलाकर अपनी अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को एक नया आयाम प्रदान कर दें. हम यह कहना चाहते हैं कि उक्त व्यवहार में बुराई का विरोध कम है, बुराई करने वाले के प्रति विरोध अधिक है. बुराई करने वाले का विरोध उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हो जाएगा, जबकि उसकी कृति युगों तक बनी रहेगी. गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस इसका ज्वलन्त प्रमाण है. इसी कारण प्रायः प्रत्येक धर्म के आचार्यों ने कहा है कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं. पापी से घृणा करके हम अपने को असद् विचारों के परिवेश के सुपुर्द कर देते हैं, जबकि पाप से घृणा करके हम प्रकारान्तर से सद्विचारों के परिवेश का निर्माण करते हैं और पाप से दूर रहने के प्रति सचेष्ट होते हैं. पुस्तकों को जलाने की घटनाओं के सन्दर्भ में हमारा कहना है कि देश के विद्वानों तथा राजनेताओं को अपनी ऊर्जा सामाजिक कलह को न्यायमुक्त ढंग से शान्त करने में लगानी चाहिए, न कि उसे और उद्दीप्त करने में. वे यदि कुछ शोधकर्ताओं को उक्त पुस्तकों के विरोध में अधिक प्रामाणिक एवं सशक्त रचनाएं प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित कर सकें तो बात ही क्या है—नकारात्मक विरोध सकारात्मक बन जाए और नव-निर्माण की एक स्वस्थ परम्परा का प्रवर्तन भी हो जाए ?

●●●